श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल,
राजस्थान का उद्‌बोधन

"कोविड़ –19 और इलेक्ट्रोपैथी जागरण, बचाव एवं चिकित्सा"
पुस्तक का विमोचन

दिनांक 07 दिसम्बर, 2020 **समय : 12.15 बजे**

स्थान : राजभवन, जयपुर

आज के इस वर्चुअल संवाद में उपस्थित इलेक्ट्रौपैथी से जुड़े विषय विशेषज्ञ, श्री हेमन्त सेठिया जी और गणमान्यजन। आप सभी का अभिनंदन और स्वागत।

यह ऐसा समय है जब पूरा विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा है। इस समय में हम सभी ने इस बात को गहराई से महसूस किया गया है कि कोरोना से बचाव में एलौपैथी के साथ ही पारम्परिक भारतीय आर्युवेद और अन्य वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। सभी स्तरों पर प्रयास यही हो रहा है कि जल्द से जल्द कोरोना से विश्व मुक्त हो। इस वैश्विक महामारी के समय हमने देखा है कि किस प्रकार विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों, विशेष रूप से हमारी प्राचीन आयुर्वेद और उसके साथ योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, होम्योपैथी आदि ने लोगों को रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में और अपने शरीर को कोरोना से लड़ने में सक्षम बनाने में अद्भुत परिणाम दिखाएं हैं। इस संबंध में मैं पूर्णतः हर्बल चिकित्सा पद्धति इलैक्ट्रोपैथी का भी आज विशेष रूप

से उल्लेख करना चाहूंगा। मुझे बताया गया है कि राजस्थान में इस महामारी से लड़ने में इस पैथी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके बारे में श्री सेठिया जी ने भी अपने भाषण में उल्लेख किया है।

मैंने कहीं पढ़ा है कि इलेक्ट्रोपैथी में दवाओं का निर्माण नॉन पॉइजन वनस्पति से किया जाता है। आपने जब इस संवाद के लिए मुझे याद किया तो मैंने खासतौर से इस चिकित्सा पद्धति के बारे में अध्ययन किया तो मुझे पता चला कि करीब 114 पौधों से इसकी दवा बनती है। पेड़–पौधों से प्राप्त रस में उपस्थित धनात्मक व ऋणात्मक शक्तियों के द्वारा इस पद्धति में इलाज किया जाता है। मुझे यह जानकर बेहद खुशी हुई है कि यह पूरी तरह से हर्बल चिकित्सा पद्धति है।

मैं यह मानता हूं कि मानवता के कल्याण के लिए परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों के साथ ही इलेक्ट्रोपैथी जैसी वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों को भी बढ़ावा दिए जाने की जरूरत है। इसके लिए जरूरी यह भी है कि ऐसी चिकित्सा

पद्धतियों के सकारात्मक परिणामों पर गहन शोध और अनुसंधान किया जाए। इसी आधार पर फिर उन्हें बढ़ावा दिए जाने पर भी कार्य हो।

यह समय सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का है। वैश्विक स्तर पर जिस तरह से सूचना और संचार तकनीक आगे बढ़ रही है, यह जरूरी है कि वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों से जुड़े बेहतरीन परिणामों को विश्व स्तर पर साझा किये जाएं ताकि ऐसे ज्ञान की ऐसी संस्कृति विकसित हो जिसमें परस्पर आदान–प्रदान से रोगमुक्त विश्व की ओर हम आगे बढ़ सकें। हमारे यहां तो कहा भी गया है :–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भागभवेत।

अर्थात् सभी सुखी होवें। सभी रोगमुक्त रहें। और सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े। मैं समझता हूं विश्वकल्याण की इसी भावना के तहत वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों का मानव

कल्याण में उपयोग किए जाने की वैश्विक सोच पर कार्य करने की आज अधिक जरूरत है।

कोरोना के इस दौर में हमने यह भी देखा है कि आर्युवेद ने बेहद कारगर भूमिका निभायी है। विश्व स्तर पर आर्युवेद की भारतीय चिकित्सा पद्धति के महत्व को स्वीकार किया गया है। इसी तरह होम्यौपैथी और इलेक्ट्रोपैथी जैसी पद्धतियों पर भी देश में इस तरह के शोध और अनुंसधान का मैं पक्षधर हूं जिनसे भारत वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों में विश्व का बड़ा केन्द्र बन सके। हमें इस बात पर चिंतन और मनन करने की जरूरत है कि वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों के जरिए कैसे स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए अधिक से अधिक कार्य हो सके।

अभी संवाद में बताया गया कि इलेक्ट्रौपैथी ने बहुत से स्तरों पर रोग निदान में कारगर भूमिका निभायी है। यह महत्वपूर्ण है। इसके लिए मैं इस पद्धति से जुड़े चिकित्सकों की सराहना करता हूं परन्तु मेरा यह भी मानना है कि वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों से ईलाज बढ़ावा देने के साथ

ही इससे जुड़े ज्ञान और नुस्खों को आधुनिक विज्ञान से जोड़ते हुए भी वृहद स्तर पर कार्य किया जाए। शोध और अनुसंधान के ऐसे कार्य वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों में किए जाएं जिनसे पूरी मानवता का भला हो सके।

कोरोना की वैश्विक आपदा में इलैक्ट्रोपैथी चिकित्सकों द्वारा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के कार्य एवं कोरोना के माइल्ड तथा मॉडरेट केसों में किये गये उपचारों के बारे में जानकर मुझे प्रसन्नता हुई है। मेरा आप सभी से इस संबंध में यह भी कहना है कि जो–जो कार्य कोरोना को लेकर आपके द्वारा किया जा रहा है, उसका गहन विश्लेषण करें और पूरे डॉक्यूमेंटेशन के साथ सभी के बीच में उसका प्रस्तुतीकरण हो। कम से कम साइड इफेक्ट्स वाली विधाओं को अगर इलाज में सम्मिलित कर सकें तो यह जनसामान्य के स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत अच्छा रहेगा। इससे सरल, सस्ती पद्धति की महत्ता एवं उपयोगिता को हम बड़े स्तर पर सामने ला सकेंगें।

केन्द्र सरकार ने कोविड–19 से लड़ने के लिए पहली बार 22 अप्रेल को सभी आयुष चिकित्सा पद्धतियों को अनुमति प्रदान कर इन्हें प्रोत्साहित करने का कार्य किया है। केन्द्र सरकार का यह कदम लोक उसके कल्याणकारी दृष्टिकोण को प्रकट करता है। हमारे लोकप्रिय सांसद श्री रामचरण बोहरा जी द्वारा सरकार के लोक कल्याण के ऐसे कदमों के प्रसार के लिए जो कार्य निरन्तर किए जा रहे हैं, उसकी मैं सराहना करता हूं।

कोरोना वैश्विक महामारी के समय हमने यह भी देखा है कि इस बीमारी से लड़ना संपन्न या निर्धन, किसी भी वर्ग के लोगों के लिए समान रूप से कष्टदायक और मुश्किल रहा है। महंगे से महंगे इलाज से भी हम कोविड–19 से लड़ पाए ऐसा आवश्यक नहीं है। बीमारी के ठीक हो जाने के बाद के नेगेटिव प्रभाव भी काफी चिंताजनक है। इलाज के साइड इफेक्ट्स और बीमारी के बाद के लक्षण भी चिंता का विषय है। इसलिए यह जरूरी है कि जनसाधारण तक सरल सुलभ और सस्ती चिकित्सा सेवाएं निरन्तर पहुंचायी

जाए। ऐसी चिकित्सा पद्धतियों को प्रोत्साहन मिले जो सभी के लिए सहज सुलभ हो। राजस्थान में इलैक्ट्रोपैथी के व्यापक विकास एवं अनुसंधान हेतु बोर्ड गठन की आवश्यकता पर श्री हेमन्त सेठिया जी ने ध्यान दिलाया है। मैं इस विषय में सरकार व अधिकारियों से जरूर बात करूगां।

इलेक्ट्रोपैथी के क्षेत्र में कार्यरत सभी चिकित्सकों, शोधकर्ताओं ने कोरोना के दौरान जो सेवाएं दी है उसकी मैं सराहना करता हूं और आग्रह भी करता हूं कि वे आगे भी इस क्षेत्र में कार्यरत रहें और मानव कल्याण के लिए कार्य करते रहें।

इस संवाद में आपने मुझे याद किया, इसके लिए बहुत आभार।

धन्यवाद। जयहिन्द।